

दानियेल की पुस्तक - संख्या अड़सठ

यहेजकेल अध्याय आठ के भविष्यसूचक संदेश का अनावरण: रविवार का कानून और अंतिम दिनों

Jeff Pippenger

2024-02-01

यहेजकेल का अध्याय आठ पवित्र शास्त्रों में भविष्यवाणी संबंधी सबसे सरल अध्यायों में से एक है। इस अध्याय का एक स्पष्ट प्रारंभिक बिंदु है।

और ऐसा हुआ कि छठे वर्ष में, छठे महीने में, महीने के पाँचवें दिन, जब मैं अपने घर में बैठा था, और यहूदा के पुरनिए मेरे सामने बैठे थे, तब वहाँ प्रभु यहोवा का हाथ मुझ पर पड़ा। यहजेकेल 8:1.

दर्शन का स्पष्ट समापन अध्याय ग्यारह में है।

इसके बाद आत्मा ने मुझे उठा लिया, और परमेश्वर की आत्मा के द्वारा दर्शन में मुझे कल्दिया में बंधुआई में पड़े लोगों के पास पहुँचा दिया। तब जो दर्शन मैंने देखा था, वह मुझसे उठ गया। फिर मैंने बंधुआई में पड़े लोगों से वे सब बातें कहीं, जो प्रभु ने मुझे दिखाई थीं। यहजेकेल 11:24, 25.

आठवें अध्याय का दर्शन छठे वर्ष के छठे महीने के पाँचवें दिन आरंभ होता है, ठीक उस समय से एक दिन पूर्व जब तारीख "666" के अनुरूप हो जाती; और सचमुच वह दर्शन रविवार के कानून के बारे में है, जो पशु का चिन्ह है, जिसकी संख्या "पाप का मनुष्य" की संख्या है, और सात में से जो आठवां राज्य है, उसकी संख्या भी है। जो लोग संख्या "666" पर विजय पाते हैं, वे परमेश्वर की मुहर प्राप्त करते हैं, और अध्याय नौ में, परमेश्वर की मुहर अन्तिम दिनों के परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों पर लगाई जा रही है।

और मैंने स्वर्ग में एक और चिन्ह देखा, बड़ा और अद्भुत: सात स्वर्गदूत, जिनके पास सात अंतिम विपत्तियाँ थीं; क्योंकि उन्हीं से परमेश्वर का क्रोध पूरा होता है। और मैंने देखा, मानो आग से मिश्रित काँच का समुद्र; और वे जो पशु पर, और उसकी प्रतिमा पर, और उसके चिन्ह पर, और उसके नाम की संख्या पर जय पा चुके थे, परमेश्वर की वीणाएँ लिए उस काँच के समुद्र पर खड़े थे। और वे परमेश्वर के दास मूसा का गीत और मेम्ने का गीत गाते हैं, यह कहते हुए, हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, तेरे काम बड़े और अद्भुत हैं; हे पवित्रों के राजा, तेरे मार्ग धर्मों और सच्चे हैं। प्रकाशितवाक्य 15:1-3.

परख की अवाधि के समाप्त होने से ठीक पहले (क्योंकि प्रकाशितवाक्य के अगले अध्याय में सात अंतिम महामारियाँ लिए सात स्वर्गदूत परमेश्वर का क्रोध उंडेलने वाले हैं), परमेश्वर के अंतिम दिनों के लोग पहचाने जाते हैं। उन्होंने चार बातों पर विजय प्राप्त की है। 'विजय' के रूप में अनूदित शब्द का अर्थ है परास्त करना। विश्वासियों ने पशु, पशु की प्रतिमा, पशु के चिह्न और उसके नाम की संख्या पर विजय प्राप्त की है। इस विजय में यह तथ्य भी शामिल है कि वे समझते हैं कि ये चार प्रतीक क्या दर्शाते हैं। वास्तव में वे चार भविष्यसूचक प्रतीक क्या निरूपित करते हैं, यह बहुत ही कम लोग ही जानते हैं।

दुनिया पहले यह जानती थी कि अध्याय सत्रह में बाबुल की वेश्या पापाई सत्ता है, परंतु जैसा कि परमेश्वर के वचन ने पहचाना है, पृथ्वी के राजाओं के साथ व्यभिचार करने वाली टायर की वेश्या के विषय की समझ संयुक्त राज्य अमेरिका के इतिहास के दौरान भुला दी जाती है। पशु पर विजय पाने का अर्थ है सत्य के वचन को ठीक रीति से बाँटते हुए यह निश्चित करना कि बाइबल की भविष्यवाणी का पशु पापाई सत्ता है। अगले ही अध्याय में, अजगर, पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता संसार को हरमगिदोन की ओर ले जाते हैं, और अंतिम दिनों में परमेश्वर के विश्वासयोग्यों को अवश्य जानना चाहिए कि वे तीन शक्तियाँ कौन हैं।

और छठे स्वर्गदूत ने अपना कटोरा महान नदी यूफ्रातेस पर उंडेल दिया; और उसका पानी सूख गया, ताकि पूर्व के राजाओं के लिए मार्ग तैयार हो जाए। और मैंने देखा कि तीन अशुद्ध आत्माएँ, जो मेंढकों के समान थीं, अजगर के मुँह से, और पशु के मुँह से, और झूठे भविष्यद्वक्ता के मुँह से निकल आईं। क्योंकि वे दुष्टात्माएँ हैं, जो चमत्कार करती हैं, और पृथ्वी के राजाओं और सारे संसार के राजाओं के पास जाती हैं, ताकि उन्हें सर्वशक्तिमान परमेश्वर के उस बड़े दिन के युद्ध के लिए इकट्ठा करें। देखो, मैं चोर की तरह आता हूँ। धन्य है वह जो जागता रहता है और अपने वस्त्र संभाल रखता है, कि कहीं वह नंगा चलने लगे और लोग उसकी लज्जा देखें। और उसने उन्हें उस स्थान पर इकट्ठा किया, जो इब्रानी भाषा में हरमगिदोन कहलाता है। प्रकाशितवाक्य 16:12-16.

पशु पर विजय का अर्थ है यह कि हम सही ढंग से समझ लें कि वह पशु कौन है। अभी उद्धृत खंड उन पर धन्य ठहराता है जो जागते रहते हैं और अपने वस्त्रों को संभाले रखते हैं, परन्तु छठी विपत्ति तक पहुँचते-पहुँचते सब मनुष्यों के लिए अनुग्रह का समय पूर्णतः समाप्त हो चुका होता है। जब मीकाएल खड़ा होता है, तब मनुष्यों का अनुग्रह का समय समाप्त हो जाता है और फिर अन्तिम सात विपत्तियाँ उँडेली जाती हैं। अनुग्रह का समय समाप्त होने के बाद वस्त्र बदलने का कोई मार्ग नहीं रहता, फिर भी छठी विपत्ति के साथ एक चेतावनी जुड़ी हुई है। वह चेतावनी इस बात से संबंधित है कि अनुग्रह का समय समाप्त होने से पहले पशु के विषय में सही समझ हो; और यदि आपके पास वह समझ नहीं है, तो अनुग्रह का समय समाप्त होने से पहले ही आप मसीह की धार्मिकता का वस्त्र खो देंगे।

“जो लोग वचन की अपनी समझ में भ्रमित हो जाते हैं, जो मसीह-विरोधी के अर्थ को देखने में असफल रहते हैं, वे निश्चय ही अपने आप को मसीह-विरोधी के पक्ष में रख देंगे। अब हमारे लिए संसार के साथ आत्मसात होने का कोई समय नहीं है। दानिय्येल अपने भाग में और अपने स्थान पर खड़ा है। दानिय्येल और यूहन्ना की भविष्यद्वाणियों को समझा जाना है। वे एक-दूसरे की व्याख्या करती हैं। वे संसार को वे सत्य प्रदान करती हैं जिन्हें प्रत्येक व्यक्ति को समझना चाहिए। इन भविष्यद्वाणियों को संसार में साक्षी होना है। इन अंतिम दिनों में उनकी पूर्ति के द्वारा, वे स्वयं अपनी व्याख्या करेंगी।” Kress Collection, 105.

यदि कोई व्यक्ति यह नहीं समझता कि मसीह-विरोधी पापसी है, तो वह अंततः पापसी के पक्ष में जा खड़ा होगा, या जैसा कि यूहन्ना ने लिखा, वह नग्न होकर चलेगा और अपनी लज्जा प्रकट करेगा। पशु पर विजय पाने का अर्थ है यह समझना कि वह पशु पापसी की सत्ता है, और पापसी की सत्ता के विषय में जो कुछ प्रकट किया गया है, उसे समझना। जो लोग विजय पाते हैं और समझते हैं कि पापसी ही पाप का मनुष्य है, उन्हें यह भी समझना होगा कि पापसी की प्रतिमा कलीसिया और राज्य के संयोजन के सिद्धांत को दर्शाती है, जिसमें उस संबंध का नियंत्रण कलीसिया के हाथ में होता है।

दानिय्येल की पुस्तक में, पशु की संरचना, जो कलीसिया और राज्य के संयोजन से बनी है, को 'उजाड़ करने वाला अपराध' के रूप में प्रस्तुत किया गया है। 'अपराध' पाप ही है, और वह पाप जो पापाई पशु का निर्माण करता है, तब होता है जब राजा अपनी शक्ति पापाई अधिकार को सौंप देते हैं। ऐसा करके वे आध्यात्मिक व्यभिचार करते हैं, जो दानिय्येल का 'उजाड़ करने वाला अपराध' और यूहन्ना की 'पशु के लिए प्रतिमा' है।

पापाई प्रतिमा पर विजय प्राप्त करने का अर्थ, परमेश्वर के वचन के माध्यम से यह समझना है कि संयुक्त राज्य अमेरिका पहले इस संबंध को स्थापित करता है, शीघ्र आने वाले रविवार के कानून के समय इसे अनुमोदित करता है, और फिर पूरे संसार को इसी संबंध को स्वीकार करने के लिए बाध्य करता है।

चर्च और राज्य का वह संबंध, जिसे संयुक्त राज्य अमेरिका पृथ्वी पर थोपेगा, इसमें एक विश्व सरकार (संयुक्त राष्ट्र) का पापसी के साथ, जो इन व्यवस्थाओं में नियंत्रणकारी शक्ति होगी, गठबंधन शामिल होगा। पशु की प्रतिमा पर विजय पाना का अर्थ है परमेश्वर के भविष्यवाणीपूर्ण वचन के द्वारा यह समझना कि पशु की प्रतिमा इन्हीं बातों का प्रतिनिधित्व करती है।

पशु और उसकी प्रतिमा पर विजय पाने में, पशु के (पोपतंत्र के) प्राधिकार के चिह्न को समझना भी शामिल है।

पशु का चिन्ह यह है कि रविवार का परमेश्वर के विश्रामदिन के रूप में बलपूर्वक पालन कराया जाए। इस चिन्ह पर विजय पाने के लिए यह समझना आवश्यक है कि रविवार की उपासना वास्तव में सूर्य-उपासना है, और यह मूर्तिपूजक बाल-पूजा से कम नहीं है। इस विजय में यह सत्य भी शामिल है कि जब तक इसे मनुष्यों पर बलपूर्वक न थोपा जाए, तब तक कोई भी पशु का चिन्ह प्राप्त नहीं करता।

परंतु पूर्व पीढ़ियों के मसीहियों ने रविवार का पालन किया, यह मानकर कि ऐसा करके वे बाइबल के सब्त का पालन कर रहे हैं; और अब हर कलीसिया में, रोमन कैथोलिक संप्रदाय सहित, ऐसे सच्चे मसीही हैं जो ईमानदारी से मानते हैं कि रविवार ईश्वरीय नियुक्ति का सब्त है। परमेश्वर उनके उद्देश्य की सच्चाई और उसके समक्ष उनकी सत्यनिष्ठा को स्वीकार करता है। परन्तु जब रविवार का पालन कानून द्वारा लागू किया जाएगा, और संसार को सच्चे सब्त के दायित्व के विषय में प्रकाश दिया जाएगा, तब जो कोई परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करते हुए, रोम के अधिकार से बढ़कर कोई अधिकार न रखने वाले एक आदेश का पालन करेगा, वह इस प्रकार परमेश्वर से ऊपर पोपवाद का सम्मान करेगा। वह रोम को और उस शक्ति को सम्मान दे रहा है जो रोम द्वारा निर्धारित उस व्यवस्था को लागू करवाती है। वह पशु और उसकी प्रतिमा की आराधना कर रहा है। तब जब मनुष्य उस व्यवस्था को अस्वीकार करते हैं जिसे परमेश्वर ने अपनी अधिकार की निशानी घोषित किया है, और उसके स्थान पर उस चीज़ को आदर देते हैं जिसे रोम ने अपनी सर्वोच्चता के चिन्ह के रूप में चुना है, तो वे इस प्रकार रोम के प्रति निष्ठा के चिन्ह—'पशु का चिन्ह'—को स्वीकार करेंगे। और तभी, जब यह मुद्दा इस प्रकार स्पष्ट रूप से लोगों के सामने रख दिया जाएगा और उन्हें परमेश्वर की आज्ञाओं और मनुष्यों की आज्ञाओं के बीच चुनाव करना होगा, तब जो लोग उल्लंघन में बने रहेंगे, वे 'पशु का चिन्ह' प्राप्त करेंगे। द ग्रेट कॉन्ट्रोवर्सी, 449.

जो लोग पशु, पशु की प्रतिमा और पशु के चिह्न पर विजय प्राप्त करते हैं, उन्हें उसके नाम की संख्या पर भी विजय प्राप्त करनी चाहिए। इतिहास के उस काल में जब टायर की व्यभिचारिणी भुलाई नहीं गई थी, प्रोटेस्टेंट जगत जानता था कि पोप सत्ता ही मसीह-विरोधी है। वे जानते थे कि पौलुस ने पोप सत्ता को "वह दुष्ट," "पाप का मनुष्य," "अधर्म का रहस्य" और "विनाश का पुत्र" ठहराया है; "जो विरोध करता है और अपने आप को हर एक से, जिसे परमेश्वर कहा जाता है या जिसकी उपासना की जाती है, ऊँचा उठाता है; ताकि वह परमेश्वर के समान परमेश्वर के मंदिर में बैठकर अपने आप को यह दिखाए कि वही परमेश्वर है।" परन्तु अब टायर की महान व्यभिचारिणी भुला दी गई है।

बीते युगों में इसोपसेफी या जेमाट्रिया के विभिन्न प्रयोग प्रचलित थे, जो यह दिखाते थे कि "666" संख्या प्रतीकात्मक रूप से पापाई पद का प्रतिनिधित्व करती है। इसका एक क्लासिक उदाहरण यह है कि पोप के माइटर पर "Vicarius Filii Dei" शब्द लिखे हैं। "Vicarius Filii Dei" का अर्थ है "ईश्वर के पुत्र का प्रतिनिधि", और इसलिए यह उसके इस दावे की ओर संकेत करता है कि वह परमेश्वर के मंदिर में बैठा है, स्वयं को परमेश्वर बताता है। "Vicarius Filii Dei" के लैटिन अक्षरों का योग छह सौ छियासठ के बराबर होता है।

वह पशु, जो पोप की सत्ता है, उसके अंक से पहचाना जाता है, और उसका अंक "666" है; पर "पाप का मनुष्य" को 1798 में एक घातक घाव लगा था और उसे भुला दिया गया है। अंतिम दिनों में वह घातक घाव चंगा किया जाएगा, और उस घातक घाव का चंगा होना यह दर्शाता है कि संयुक्त राज्य अमेरिका पहले अपने ही देश में उस पशु की प्रतिमा बनाता है और फिर सारे संसार को भी वैसा ही करने के लिए बाध्य करता है।

पशु की विश्व-छवि एक साथ दोहरी और तिहरी है। यह भविष्यवाणीय रूप से दोहरी है क्योंकि यह कलीसिया और राज्य के संयोजन से बनी है, पर यह तिहरी भी है क्योंकि यह ड्रैगन, पशु और झूठे नबी से मिलकर बनी है। जब उन ही शक्तियों का तिहरा संघ स्थापित हो जाएगा, जो संसार को आर्मगेडन तक ले जाएँगी, तब वे उस पशु के रूप में होंगे, जो सात में से है और आठवाँ राज्य है, और वह छठे राज्य का तिहरा संघ भी होगा। अंतिम दिनों में पशु के नाम का अंक फिर से "666" है, क्योंकि वह तीन राज्यों का प्रतिनिधित्व करता है, जो तीनों ही छठे राज्य के अंग हैं।

पशु, उसकी प्रतिमा, उसके चिन्ह और उसके नाम की संख्या पर विजय पाना दरअसल इस पहली को समझना है कि "आठवाँ सात में से है", जो दानिय्येल के दूसरे अध्याय का रहस्य है, जिसे समझने के लिए दानिय्येल ने प्रार्थना की

थी। यह यीशु मसीह के प्रकाशितवाक्य का ऐसा तत्व है जो अनुग्रहकाल समाप्त होने से ठीक पहले खोला जाता है, क्योंकि जैसा यूहन्ना ने कहा, "समय निकट है।" इसी कारण, जो लोग वह विजय प्राप्त करते हैं, उन्हें उन स्वर्गदूतों के साथ दिखाया गया है जो विपत्तियाँ उंडेलते हैं, क्योंकि वे अनुग्रहकाल समाप्त होने से ठीक पहले ही वह विजय, अर्थात् आवश्यक भविष्यसूचक समझ, प्राप्त कर लेते हैं।

जो यह समझते हैं कि यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य अनुग्रह काल के समाप्त होने से ठीक पहले मुहर से खोला जाता है, और यह कि संख्या "666" उस दर्शन का एक हिस्सा है, वे यह नहीं चूकेंगे कि यहजेकेल के आठवें अध्याय का दर्शन छठे वर्ष के छठे महीने के पाँचवें दिन (जो कि छठे दिन से एक दिन पहले है) आरंभ होता है। अध्याय आठ के अंत तक पच्चीस पुरुष सूर्य के आगे दण्डवत कर रहे होते हैं, और अध्याय नौ उन लोगों की पहचान करता है जो परमेश्वर की मुहर प्राप्त करते हैं।

दर्शन का संदर्भ पशु का चिह्न और परमेश्वर की मुहर है, और यह दर्शन रविवार के कानून के समय अनुग्रहकाल के बंद होने से ठीक पहले प्रकट होता है, जिसका प्रतीक संख्या "666" है। परन्तु संयुक्त राज्य अमेरिका में रविवार के कानून के समय होने वाला जो अनुग्रहकाल का समापन पहचाना गया है, वह मानवजाति के अनुग्रहकाल का समापन नहीं है; वह केवल सेवेंथ-डे एडवेंटिस्टों के लिए अनुग्रहकाल का समापन है।

यह दर्शन यरूशलेम के भीतर घटित होता हुआ प्रस्तुत किया गया है, जो सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया का एक प्रतीक है। संयुक्त राज्य अमेरिका में रविवार के कानून के समय, सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट ही वह एकमात्र वर्ग हैं जो वहीं और उसी समय सब्त के प्रकाश के प्रति उत्तरदायी ठहराए जाते हैं।

यदि सत्य का प्रकाश आपके समक्ष प्रस्तुत किया गया है, जो चौथी आज्ञा के सब्त को प्रकट करता है और यह दिखाता है कि रविवार-पालन के लिए परमेश्वर के वचन में कोई आधार नहीं है, और फिर भी आप झूठे सब्त को पकड़े रहते हैं, उस सब्त को पवित्र मानने से इन्कार करते हुए जिसे परमेश्वर 'मेरा पवित्र दिन' कहते हैं, तो आप पशु का चिह्न ग्रहण करते हैं। यह कब होता है?—जब आप उस आदेश का पालन करते हैं जो आपको रविवार को श्रम छोड़ने और परमेश्वर की आराधना करने का हुक्म देता है, जबकि आप जानते हैं कि बाइबल में एक भी शब्द ऐसा नहीं है जो दिखाता हो कि रविवार एक सामान्य कार्य-दिवस से भिन्न है, तब आप पशु का चिह्न ग्रहण करने के लिए सहमत होते हैं और परमेश्वर की मुहर को अस्वीकार करते हैं। यदि हम यह चिह्न अपने माथे पर या अपने हाथ पर प्राप्त करते हैं, तो अवज्ञाकारी लोगों के विरुद्ध जो दण्डादेश सुनाए गए हैं, वे हम पर अवश्य पड़ेंगे। परन्तु जीवित परमेश्वर की मुहर उन पर लगाई जाती है जो प्रभु के सब्त का विवेकपूर्वक पालन करते हैं।

Review and Herald, 27 अप्रैल, 1911.

यहजेकेल अध्याय आठ से अध्याय ग्यारह तक की दृष्टि, यरूशलेम के लिए अनुग्रहकाल के समापन तक पहुँचने वाले इतिहास की पहचान करती है। इसे संख्या "666" के आने से ठीक एक दिन पहले घटित होने के रूप में चित्रित किया गया है, और अध्याय आठ यरूशलेम के भीतर बढ़ती हुई बगावत को पहचानता है, जो अंततः प्रमुख पुरुषों के सूर्य के आगे झुकने के साथ पराकाष्ठा पर पहुँचती है, और इस प्रकार वे पशु का चिह्न प्राप्त करते हैं।

अध्याय नौ यरूशलेम से गुजरते हुए एक स्वर्गदूत का वर्णन करता है (जो एक क्रमिक प्रगति का संकेत करता है), और वह विनाशकारी स्वर्गदूतों के आने से पहले एक वर्ग पर मुहर लगाता है, जो उसके बाद उन सबको मार डालते हैं जिनके पास वह मुहर नहीं होती। दोनों अध्याय एक क्रमिक इतिहास का प्रतिनिधित्व करते हैं जो रविवार के कानून तक ले जाता है, जहाँ एक वर्ग सूर्य के आगे झुकता है और दूसरा परमेश्वर की मुहर प्राप्त करता है। तब दुष्टों को यरूशलेम से हटा दिया जाता है, क्योंकि रविवार का कानून दुष्टों और बुद्धिमानों को अलग कर देता है।

यहजेकेल अध्याय नौ में वर्णित मुहरबंदी वही है जो प्रकाशितवाक्य अध्याय सात में वर्णित है।

यदि ऐसे दृश्य आने वाले हैं, दोषी संसार पर ऐसे भयंकर न्याय होने वाले हैं, तो परमेश्वर की प्रजा के लिए शरण कहाँ होगी? जब तक प्रकोप बीत न जाए, उनकी सुरक्षा कैसे होगी? यूहन्ना देखता है कि प्रकृति के तत्त्व—भूकंप,

आंधी-तूफान और राजनीतिक कलह—ऐसे प्रदर्शित हैं मानो चार स्वर्गदूतों ने उन्हें थाम रखा हो। ये पवनें नियंत्रण में हैं, जब तक परमेश्वर उन्हें छोड़ देने का आदेश न दे। इसी में परमेश्वर की कलीसिया की सुरक्षा है। परमेश्वर के स्वर्गदूत उसकी आज्ञा का पालन करते हुए पृथ्वी की पवनों को रोके हुए हैं, ताकि पवनें न पृथ्वी पर चलें, न समुद्र पर, न किसी वृक्ष पर, जब तक परमेश्वर के दासों के मार्थों पर मुहर न कर दी जाए। एक पराक्रमी स्वर्गदूत पूरब (या सूर्योदय की दिशा) से ऊपर उठता हुआ देखा जाता है। यह सबसे शक्तिशाली स्वर्गदूत अपने हाथ में जीवित परमेश्वर की मुहर लिए हुए है—अर्थात् उस की, जो अकेला जीवन दे सकता है, जो मार्थों पर वह चिह्न या लेख अंकित कर सकता है, जिन्हें अमरत्व, अनन्त जीवन दिया जाएगा। इसी सर्वोच्च स्वर्गदूत की वाणी को यह अधिकार था कि वह चारों स्वर्गदूतों को आज्ञा दे कि वे चारों पवनों को तब तक रोके रखें जब तक यह कार्य पूरा न हो जाए, और जब तक वह उन्हें छोड़ देने का आदेश न दे।

जो संसार, शरीर और शैतान पर विजय पाते हैं, वे ही वे अनुग्रहित होंगे जिन्हें जीवित परमेश्वर की मुहर मिलेगी। जिनके हाथ शुद्ध नहीं, जिनके हृदय पवित्र नहीं, उन पर जीवित परमेश्वर की मुहर नहीं होगी। जो पाप की योजना बनाते और उसे करते हैं, उन्हें अनदेखा कर दिया जाएगा। केवल वे ही, जो परमेश्वर के सामने अपने मनोभाव में, महान प्रतिरूपात्मक प्रायश्चित्त-दिवस में पापों का पश्चात्ताप करने और उन्हें स्वीकार करनेवालों की स्थिति में हैं, परमेश्वर की रक्षा के योग्य समझे और चिह्नित किए जाएंगे। जो लोग अपने उद्धारकर्ता के प्रगट होने की—प्रातःकाल की प्रतीक्षा करनेवालों से भी अधिक आतुरता और अभिलाषा के साथ—दृढ़तापूर्वक प्रतीक्षा करते, निहारते और जागते रहते हैं, उनके नाम मुहर पाए हुआओं में गिने जाएंगे। जिनकी आत्मा पर सत्य का समस्त प्रकाश चमक रहा है, जिन्हें अपने अंगीकृत विश्वास के अनुरूप कर्म रखने चाहिए, परन्तु वे पाप के बहकावे में आकर अपने हृदय में मूर्तियाँ स्थापित करते, परमेश्वर के सम्मुख अपनी आत्माओं को भ्रष्ट करते, और जो उनके साथ पाप में सहभागी होते हैं उन्हें भी दूषित करते हैं—उनके नाम जीवन की पुस्तक से मिटाए जाएंगे, और वे आधी रात के अन्धकार में छोड़ दिए जाएंगे; उनके दीपकों के साथ उनके पात्रों में तेल नहीं होगा। 'परन्तु जो मेरे नाम का भय मानते हैं, उनके लिए धर्म का सूर्य अपने पंखों में आरोग्य लेकर उदय होगा।'

"परमेश्वर के दासों की यह मुहरबंदी वही है जो यहजेकेल को दर्शन में दिखाई गई थी। यूहन्ना भी इस अत्यंत चकित कर देने वाले प्रकाशन का साक्षी रहा था। उसने समुद्र और लहरों को गरजते देखा, और भय के कारण मनुष्यों के हृदय चूकते हुए देखे। उसने पृथ्वी को हिलते, और पहाड़ों को समुद्र के बीचोंबीच ले जाए जाते देखा (जो वास्तव में घटित हो रहा है), उसका जल गरजता और अशांत होता हुआ, और उसके उफान से पहाड़ काँपते हुए। उसे विपत्तियाँ, महामारी, अकाल और मृत्यु अपना भयानक कार्य करते हुए दिखाए गए।" Testimonies to Ministers, 445.

प्रकाशितवाक्य के सातवें अध्याय में एक लाख चवालीस हजार की मुहरबंदी यहजेकेल के नौवें अध्याय में भी दर्शाई गई है, और मुहर लगाने वाला स्वर्गदूत सबसे शक्तिशाली स्वर्गदूत है, जो पूर्व से उदय होता है। जो नाश हो जाते हैं, जिनके नाम जीवन की पुस्तक से मिटा दिए जाते हैं, उन्हें इस रूप में दर्शाया गया है कि "उनके दीपकों के साथ उनके पात्रों में तेल नहीं है।" यहजेकेल के आठवें से ग्यारहवें अध्याय के दर्शन में जो दो वर्ग हैं, वे मत्ती अध्याय पच्चीस की बुद्धिमान और मूर्ख कुँवारियाँ हैं, और अतः वे एडवेंटिस्ट हैं।

"मत्ती 25 की दस कुँवारियों का दृष्टांत भी एडवेंटिस्ट लोगों के अनुभव को चित्रित करता है।" The Great Controversy, 393.

सिस्टर व्हाइट स्पष्ट रूप से यहजेकेल की दृष्टि के यरूशलेम को एडवेंटिज़्म के रूप में पहचानती हैं:

परमेश्वर की सच्ची प्रजा, जिसके हृदय में प्रभु के कार्य की भावना और आत्माओं के उद्धार की चिन्ता होती है, पाप को सदैव उसके वास्तविक, पापपूर्ण स्वरूप में देखेगी। वह हमेशा उन पापों से निष्ठापूर्वक और स्पष्ट रीति से निपटने के पक्ष में रहेगी, जो सहज ही परमेश्वर की प्रजा को घेर लेते हैं। विशेषकर कलीसिया के लिए समापन के कार्य में, उस मुहरबन्दी के समय में जब एक लाख चवालीस हजार परमेश्वर के सिंहासन के सामने निर्दोष खड़े होंगे, वह परमेश्वर के नामधारी लोगों की बुराइयों को सबसे गहराई से महसूस करेगी। यह बात भविष्यद्वक्ता के

उस चित्रण द्वारा बलपूर्वक प्रकट की गई है, जिसमें अन्तिम कार्य को ऐसे पुरुषों की छवि से दिखाया गया है जिन-जिन के हाथ में वध का हथियार था। उनमें से एक मनुष्य सन का वस्त्र पहने हुए था, और उसकी कमर पर लेखक का दवात था। 'और प्रभु ने उससे कहा, नगर के बीच से, यरूशलेम के बीच से होकर निकल, और उन पुरुषों के माथों पर एक चिन्ह कर जो उसके बीच में किए जा रहे सब घृणित कामों के कारण आहें भरते और विलाप करते हैं।' टेस्टिमोनीज़, खंड 3, 266.

यहेजकेल के अध्याय आठ से ग्यारह तक का दर्शन, रविवार के कानून तक और उसके समय में पहुँचने वाले एडवेंटिज़्म के इतिहास को सीधे संबोधित करता है। यह यरूशलेम (एडवेंटिज़्म) के भीतर मौजूद उपासकों के दो वर्गों की पहचान करता है, और भविष्यसूचक रूप से यीशु मसीह के प्रकाशितवाक्य से सम्बद्ध है, जो अनुग्रह काल के समापन से ठीक पहले खोला जाता है; क्योंकि उसके आरंभी उल्लेखों में भविष्यसूचक प्रतीकवाद के रूप में संख्या "666" प्रस्तुत की गई है। ऐसा करते हुए यह उन चार बातों में से एक की पहचान करता है, जिन पर बुद्धिमान लोगों को अंतिम दिनों में विजय पाना होगा; और वे चार बातें उस प्रकाश का हिस्सा हैं जिसमें "आठवाँ" "सात में से" है। प्रकाशितवाक्य पंद्रह यह भी बताता है कि जो लोग पापसी के चार प्रतीकात्मक पहलुओं पर विजय पाते हैं, वे मूसा और मेम्ने का गीत गाते हैं।

यशायाह अध्याय 27 में उस दिन के बारे में कहा गया है कि अंतिम दिनों के धर्मी 'दाख की बारी का गीत' गाएँगे—वह वही गीत जिसे मेम्ना ने तब गाया था जब वह मनुष्यों के बीच चलता था—जो यह दर्शाता है कि कुछ चुने हुए लोगों को अब छोड़ते हुए एक नई चुनी हुई प्रजा का चयन किया जा रहा है। वह गीत अंतिम दिनों के 'बुद्धिमान' लोग यहेजकेल अध्याय 9 और प्रकाशितवाक्य अध्याय 7 में वर्णित मुहर लगने के समय गाते हैं। यहेजकेल के अध्याय 8 से 11 तक का दर्शन उसी गीत का एक भाग है।

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

परमेश्वर के सच्चे लोग, जिनके हृदय में प्रभु के कार्य की भावना और आत्माओं के उद्धार की चिंता है, पाप को सदैव उसके वास्तविक, पापी स्वरूप में देखेंगे। वे सदैव उन पापों के प्रति निष्ठावान और स्पष्ट व्यवहार के पक्ष में रहेंगे जो आसानी से परमेश्वर के लोगों को घेर लेते हैं। विशेषकर कलीसिया के समापन के कार्य में, उस मुहर लगाने के समय में, जब वे एक लाख चवालीस हजार, जिन्हें परमेश्वर के सिंहासन के सामने बिना दोष के खड़ा होना है, तब वे परमेश्वर के कहलाने वाले लोगों के कुकर्मों को सबसे गहराई से अनुभव करेंगे। इस बात को भविष्यद्वक्ता के उस चित्रण द्वारा अत्यंत स्पष्ट रूप से दिखाया गया है, जिसमें अंतिम कार्य को ऐसे पुरुषों के रूपक से प्रस्तुत किया गया है कि हर एक के हाथ में वध का हथियार है। उनमें से एक व्यक्ति सूत के वस्त्र पहने हुए था, और उसकी बगल में लेखक की दवात थी। "और प्रभु ने उससे कहा, नगर के बीच से, यरूशलेम के बीच से होकर जा, और उन लोगों के माथों पर एक चिह्न लगा दे, जो उसके बीच में किए जाने वाले सब घृणित कामों के कारण आह भरते और विलाप करते हैं।"

इस समय परमेश्वर की सभा में कौन खड़े हैं? क्या वे, जो अपने को परमेश्वर के कहलाने वाले लोगों के बीच होने वाली बुराइयों का व्यावहारिक रूप से बचाव करते हैं, और यदि खुलकर नहीं तो अपने मन में, उन लोगों के विरुद्ध बड़बड़ाते हैं जो पाप को ताड़ना देते हैं? क्या वे, जो उनके विरोध में खड़े होते हैं और बुरा करने वालों से सहानुभूति रखते हैं? कदापि नहीं! जब तक वे पश्चाताप न करें, और उस शैतानी काम को न छोड़ें—जिसमें वे काम का भार उठाने वालों को दबाते हैं और सिय्योन में पापियों के हाथ मजबूत करते हैं—तब तक वे कभी भी परमेश्वर की मुहरदार स्वीकृति का चिन्ह नहीं पाएँगे। वे दुष्टों के सर्वनाश में गिर पड़ेंगे, जिसका चित्रण उन पाँच पुरुषों के कार्य द्वारा किया गया है जो वध के हथियार लिए हुए हैं। इस बात पर भलीभाँति ध्यान दो: जो लोग सत्य का शुद्ध चिन्ह प्राप्त करते हैं, जो उनमें पवित्र आत्मा की शक्ति से अंकित किया जाता है, और जिसका प्रतिनिधित्व सन के वस्त्र पहने हुए पुरुष द्वारा लगाए गए चिह्न से होता है, वे ही हैं जो कलीसिया में की जाने वाली सब घृणित बातों के लिए 'कराहते और रोते' हैं। पवित्रता के लिए और परमेश्वर के आदर व महिमा के प्रति उनका प्रेम ऐसा है, और पाप की अत्यधिक पापमयता के प्रति उनकी दृष्टि इतनी स्पष्ट है, कि उन्हें व्याकुलता में, यहाँ

तक कि कराहते और रोते हुए, दर्शाया गया है। यहजेकेल का नवां अध्याय पढ़ो.

"परन्तु जो लोग पाप और धार्मिकता के बीच का व्यापक भेद इस प्रकार नहीं देखते, और न ही वे वैसा अनुभव करते जैसे वे करते हैं जो परमेश्वर की परामर्श में खड़े हैं और चिह्न ग्रहण करते हैं, उन सब का सामूहिक वध उन पाँच पुरुषों को, जो वध के हथियार लिए हुए थे, दिए गए आदेश में वर्णित है: 'नगर भर में उसके पीछे जाओ, और प्रहार करो; न तुम्हारी आँख बख्शो, न तुम दया करो; बूढ़ों और जवानों को, कुमारी कन्याओं, छोटे बच्चों और स्त्रियों को निःशेष मार डालो; पर जिस किसी मनुष्य पर चिह्न हो, उसके निकट न जाना; और मेरे पवित्रस्थान से आरम्भ करो.'" टेस्टिमोनीज़, खंड 3, 266, 267.